

बीत गया हेमंत भ्रात, शिशिर ऋतु आई !
 प्रकृति हुई दयुतिहीन, अवनि में कुंझटिका है छाई ।

पड़ता खूब तुषार पद्मदल तालों में बिलखाते,
 अन्यायी नृप के दंडों से यथा लोग दुख पाते ।

निशा काल में लोग घरों में निज-निज जा सोते हैं,
 बाहर श्वान, स्यार चिल्लाकर बार-बार रोते हैं ।

अर्द्धरात्रि को घर से कोई जो आँगन को आता,
 शून्य गगन मंडल को लख यह मन में है भय पाता ।

तारे निपट मलीन चंद ने पांडुवर्ण है पाया,
 मानो किसी राज्य पर है, राष्ट्रीय कष्ट कुछ आया ।

धनियों को है मौज रात-दिन हैं उनके पौ-बारे,
 दीन दरिद्रों के मत्थे ही पड़े शिशिर दुख सारे ।

वे खाते हैं हलुवा-पूड़ी, दूध-मलाई ताजी,
 इन्हें नहीं मिलती पर सूखी रोटी और न भाजी ।

वे सुख से रंगीन कीमती ओढ़ें शाल-दुशाले,
 पर इनके कंपित बदनों पर गिरते हैं नित पाले ।

वे हैं सुख साधन से पूरित सुघर घरों के वासी,
 इनके टूटे-फूटे घर में छाई सदा उदासी ।

पहले हमें उदर की चिंता थी न कदापि सताती,
 माता सम थी प्रकृति हमारी पालन करती जाती ॥

हमको भाई का करना उपकार नहीं क्या होगा,
 भाई पर भाई का कुछ अधिकार नहीं क्या होगा ।

परिचय

जन्म: १८९५, बिलासपुर (छत्तीसगढ़)

मृत्यु: १९८९

परिचय: छायावाद के प्रतिष्ठित कवि मुकुटधर पांडेय जी ने १२ वर्ष की अल्पायु से ही लिखना शुरू कर दिया था । आपकी काव्य रचनाओं में मानव प्रेम, प्रकृति सौंदर्य, मानवीकरण, आध्यात्मिकता और गीतात्मकता के तत्त्व प्रमुखता से परिलक्षित होते हैं । आपने पद्य के साथ-साथ गद्य में भी पूरे अधिकार के साथ लिखा है । आपने निबंध और आलोचना ग्रंथ भी लिखे हैं ।

प्रमुख कृतियाँ: 'पूजाफूल' 'शैलबाला' (कविता संग्रह), 'लच्छमा' (अनूदित उपन्यास), 'परिश्रम' (निबंध) 'हृदयदान', 'मामा', 'स्मृतिपुंज' आदि ।

पद्य संबंधी

प्रस्तुत कविता में कवि ने शिशिर ऋतु में पड़ने वाली अत्यधिक ठंडक से परेशान प्राणियों, साधन संपन्न एवं अभावग्रस्त व्यक्तियों के जीवनयापन का सजीव वर्णन किया है । कवि का कहना है कि धनवान और निर्धन दोनों भाई-भाई हैं । समाज में अमीरों को गरीब भाइयों की भलाई के बारे में अवश्य विचार करना चाहिए ।

शब्द संसार

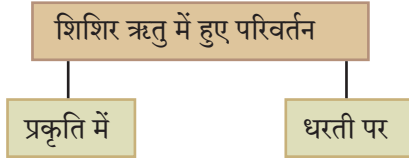
द्युतिहीन वि.(सं.) = तेजहीन
स्यार पुं.सं.(हिं.) = गीदड़, सियार

पांडुवर्ण पुं.सं.(सं.) = पीला रंग
पाला पुं.सं.(हिं.) = बर्फ, हिम

स्वाध्याय

* सूचना के अनुसार कृतियाँ कीजिए :-

(१) कृति पूर्ण कीजिए :



(२) जीवन शैली में अंतर स्पष्ट कीजिए :

धनी	दीन-दरिद्र

(३) तालिका पूर्ण कीजिए :

ऋतुएँ	अंग्रेजी माह	हिंदी माह
१. वसंत	मार्च, अप्रैल	चैत्र, बैसाख
२. ग्रीष्म	-----	-----
३. वर्षा	-----	-----
४. शरद	-----	-----
५. हेमंत	-----	-----
६. शिशिर	-----	-----

(४) निम्न मुद्दों के आधार पर पद्य विश्लेषण कीजिए :

१. रचनाकार
२. रचना का प्रकार
३. पसंदीदा पंक्ति
४. पसंदीदा होने का कारण
५. रचना से प्राप्त संदेश

(५) अंतिम दो पंक्तियों से मिलने वाला संदेश लिखिए ।



उपयोजित लेखन

‘विश्वबंधुता वर्तमान युग की माँग’ विषय पर अस्सी से सौ शब्दों में निबंध लिखिए ।



C52619